

halten Çat. Br. 14, 8, 28, 3. — Statt des sinnlosen ते विशन्ते मुदा युक्ताः MBh. 7, 1551 liest die ed. Bomb. ते विंशतिपदे यताः।

— caus. 1) *eingehen machen in*: इच्छेयमेतं शक्नोतीत्यत्रेदं वेषयामि वः AV. 3, 13, 7. — 2) *sitzen machen, — heissen*: तमवीविशदासने स्वे Bhāg. P. 10, 69, 14.

— desid. *विविक्तति hineinzutreten —, hineinzugehen beabsichtigen*: धारयाम् Bhāg. P. 1, 17, 48. अग्रिमम्, वक्रिमम् KATHAS. 110, 6. 122, 97. पा-  
एउवीयामिव चमं कर्णमूलं विविक्ततीम् 90, 18.

— अधि caus. *setzen auf*: काक्ता शय्यामधिवेष्य Bhāg. P. 10, 48, 6.

— अनु 1) *nach Jmd (acc.) hineingehen in (acc.)*: पतिं साधौ तमग्रिम-  
नुवेद्यति Bhāg. P. 1, 13, 55. — 2) *hineingehen, hineinfahren überh.* R. 4, 37, 32. Bhāg. P. 4, 9, 7. 10, 86, 45. वक्रिमम् PAKĀT. 187, 25. अनुविष्टा भगवता Bhāg. P. 3, 20, 17. — 3) *Jmd (acc.) folgen* MBh. 1, 796. — Vgl. अनुवेश. — caus. *setzen*: समूहं तस्मिन्नेवासने R. Gorr. 2, 35, 17.

— अप caus. *wegschicken*: अन्यत्र पापीर्यं वेषया धियः AV. 9, 2, 25.

— अभि, partic. *विष्ट ergriffen —, in der Gewalt stehend von*: मद-  
नाभिविष्ट R. 5, 11, 18. 22. — caus. *eingehen machen in, richten auf*: अ-  
व्यक्तवर्त्मन्यभिवेशितात्मा Bhāg. P. 3, 8, 33.

— आ 1) *eingehen, eintreten, sich niederlassen in oder unter (acc.), eindringen, fahren in, Besitz nehmen von*: नेदिह पुरा नाष्टा रत्नास्या-  
विशान् Çat. Br. 1, 1, 4, 6. इन्द्रमिन्द्रो वषा विश RV. 1, 176, 1. 5, 7, 91, 11.  
9, 83, 7. 10, 16, 6. (अग्रिः) शेषधीरा विशे 1, 98, 2. यो अग्रौ रुद्रा यो अ-  
प्स्वर्त्तय शेषधीर्वीरुधि आविवेश AV. 7, 87, 1. ÇVETĪÇV. UP. 2, 17. मातृः  
RV. 1, 141, 5. यावापृथिवी 3, 32, 10. मर्त्यान् 4, 58, 3. योनिम् 5, 47, 3. 6,  
36, 3. अमीवा या नो गर्पमाविशे 74, 2. कृत्विषा पृथ्वी भूत्या ज्ञाया वि-  
शते यतिम् 10, 83, 29. ज्ञान्युः पतिस्तन्वर्मा विविश्याः 10, 3. 125, 6. मा  
नो रत्न आवेशित् 8, 49, 20. VS. 4, 13, 7, 46. 12, 105. 23, 49. TBr. 3, 1, 2,  
8. कुमारं ज्ञातं ब्रधन्या वागाविशति zuletzt führt die Stimme in das Kind  
AIT. Br. 3, 2. 3, 2. तामयं पृथिवीं आविशत् 23. Çat. Br. 11, 6, 2, 6. 12, 3,  
1, 2, 14, 4, 2, 26. 5, 5, 18. — गृह्णाविशतो पुंसाम् 80 v. a. Haushalter Bhāg.  
P. 4, 30, 19. शालायाम् 8, 9, 17. सभाम् HARIV. 6817. अस्तःपुरम् R. 2, 70, 27.  
R. Gorr. 2, 14, 21. Bhāg. P. 3, 3, 6. मन्दिरम् KATHAS. 20, 224. अस्तर्कम्  
R. Gorr. 2, 3, 3. स्वं धिष्यम् Bhāg. P. 3, 16, 31. mit Ergänzung von गृ-  
ह्णम् u. s. w. R. 1, 18, 22. Kām. Nitis. 14, 39. Bhāg. P. 10, 64, 16 (80 v. a.  
heimkehren im Gegens. zu व्रज). नगरम् DAÇAK. 69, 10. BHATT. 3, 18.  
बिलम् MBh. 1, 8379 (med.). 7294. गृह्णाम् RAGH. 2, 26. वनम् R. 2, 43, 6  
(med.). Bhāg. P. 2, 7, 23. पातालम् Spr. 1756. जलम् M. 11, 223. Spr.  
2520. Bhāg. P. 3, 13, 26. सरः 23, 25. समुद्रम् RAGH. 3, 28. ययौ स्वर्गं ख-  
माविष्य 80 v. a. sich in die Luft erhebend R. Gorr. 1, 62, 16. जगामा-  
काशमाविष्य 36, 4. 4, 63, 24. 5, 6, 1. 89, 43. गगनमाविष्य 3, 34, 25. वायु-  
मार्गमाविष्यत् 4, 10, 24. संवर्तका वक्रिः — लोकमाविशते MBh. 3, 12873.  
fg. परेताचरितां रविराविशते दिशम् tritt ein in R. 2, 63, 14. योनिं  
मानुषीम् MBh. 1, 7300 (med.). कर्णो दन्तिषाम् R. 5, 56, 27. Bhāg. P. 3, 6,  
14. देहवर्णं विभिद्य ते (बाणाः) सात्यकैराविष्युः शरीरम् drangen in  
MBh. 7, 4694. 4881. Bhāg. P. 4, 10, 17. 11, 3. तदाविशति भूतानि कर्मा-  
णि मरुति सक्त कर्मभिः M. 1, 18. यद्यस्य सो ऽदधात्सर्गे ततस्य स्वयमा-  
विशते 29. Bhāg. P. 3, 6, 2. 10, 8. 26, 53. Verz. d. Oxf. H. 47, a, No. 103,  
Z. 8. (पुरुषः) ब्रह्मज्ञानमाविष्य 4, 24, 51. नाविशामि (so die ed. Bomb.) प-

रस्त्रियम् 80 v. a. geschlechtlichen Umgang haben MBh. 12, 2908. आवि-  
वेशशभागेन मन आनकडुन्दुभेः Bhāg. P. 10, 2, 16. आविशसि च यं यताः  
fahren in, sich Jmdes bemächtigen MBh. 3, 14507. 2256. मामकात्तरमा-  
विशः 12, 2890. fg. HARIV. 9478. संज्ञतमश्चमाविष्य तया मिश्रीबभूव सः  
11237. कन्दर्पः — आविष्टमभ्यपात्तूर्णं कृतोदाहृमुपापतिम् R. 1, 25, 10 (26,  
11 Gorr.). MĀRK. P. 51, 80. 101. सत्त्वमाविष्य भाषते R. 2, 33, 10. आवि-  
शत्यप्रमत्तो ऽतो प्रमत्तं जनमत्तकृत् Bhāg. P. 3, 29, 39. 5, 13, 2. मृत्युः MBh.  
3, 10450. Spr. 4924 (med.). क्रोधो नात्तरमाविशत् R. 1, 65, 3. आविष्टं ना-  
त्तरं कामो न क्रोधो ददशे मुनेः R. Gorr. 1, 67, 1. ततस्तौ मन्युराविशत्  
MBh. 1, 7727. क्रोधः MĀRK. P. 106, 27. भयम्, भीः MBh. 3, 11971. 5, 7221.  
R. Gorr. 1, 24, 4. मोहः MBh. 1, 216. कश्मलम् 4, 1052. चित्ता R. 2, 63,  
44. वेपथुः MBh. 5, 7279. आविवेशोपसर्गस्तं तमः सूर्यमिवामुर्म् R. 2, 63, 2.  
तस्माद्वा नाविशवाणु ब्रह्मकृत्या 64, 53. स्मृतिः 4, 89, 6. आविवेश मदा-  
न्हर्षो देवानाम् 6, 92, 72. चौरमाविशसि प्रजागराः Spr. (II) 300. शोकस्था-  
नसक्तमाणि भवस्थानशतानि च । दिवसे दिवसे मूढमाविशति (I) 3022.  
लोकानाविशते यशः dringt in Bhāg. P. 3, 14, 11. — 2) *sich nahe her-  
beimachen zu, kommen*: स मा धीरः पाकमत्रा विवेश RV. 1, 164, 21. न-  
मस्ता 3, 31, 5. आ नो हृप्ता मर्धुमत्तो विशत् 10, 98, 4. VS. 34, 50. ऊर्जा मा  
विश 3, 22. — 3) *sich niederlassen auf, sich setzen*: आसनानि MBh. 5,  
3. — 4) *in einen Zustand —, in ein Verhältniss eintreten, gerathen in*:  
निर्हीतिम् RV. 1, 164, 32. इन्द्रस्य सृष्ट्यम् 9, 56, 2. कृतम् 4, 23, 9. त्वं राजैव  
सुव्रतो गिरः सोमा विवेशिष्ठ 9, 20, 5. रूपाणि Farben annehmen 9, 23, 4.  
KAUC. 43. सुखम् MBh. 5, 29. मन्युम् 13, 475. भयम् R. 7, 22, 11. शोकम्  
KATHAS. 9, 20. उपशमम् Bhāg. P. 6, 13, 26. मुष्यताम् 4, 22, 33. राज्यम् die  
Herrschaft antreten R. Gorr. 2, 41, 19. — 5) partic. आविष्ट a) in act. Bed.  
α) *hineingegangen, eingedrungen*: कर्णाविष्ट Bhāg. P. 11, 30, 3. MAITRĀJUP.  
6, 31. भोगिनः कञ्चुकाविष्टः steckend in Spr. 2074. यन्मृगेषु पय आविष्टम्  
KAUC. 115. अर्धाविष्टया गिरा mit halb stockender Stimme KATHAS. 14, 46.  
भगवत्याविष्टात्मा Bhāg. P. 4, 31, 8 (vgl. γ). आविष्टलिङ्गा जातिः fest siz-  
zend 80 v. a. constant PAT. bei GOLD. MĀN. 153, 6 (nach KAMJ. pass.: आ-  
विष्टे लिङ्गं यया साविष्टलिङ्गा नियतलिङ्गेत्यर्थः). आविष्टलिङ्गव Comm.  
zu Bhāg. P. 4, 7, 37. — β) *sitzend auf (loc.)*, von Vögeln Bhāg. P. 10, 41,  
22. in der Luft schwebend (= आकाशसंबद्ध Comm.): अथ R. 7, 31, 14. —  
γ) *ganz in Etwas steckend, einer Sache ganz hingegeben (तत्परः)* AK. 3.  
1, 9, v. 1. — b) mit pass. Bed. α) *bewohnt, erfüllt von*: बहुलाविष्ट दित्त  
bewohnt AIT. Br. 3, 44. तैर्ऽरात्मभिराविष्टमाश्रमम् R. 3, 1, 27. — β) *ge-  
troffen von*: मन्मथशराविष्ट R. 3, 32, 20. आविष्ट इव तत्रस्थदेवीदक्षिण-  
पाणिना KATHAS. 16, 50. — γ) *ergriffen von —, besessen von —, befal-  
len —, überwältigt —, in der Gewalt stehend von*: कलिना MBh. 3, 2270.  
आविष्टेयं मया बाला HARIV. 8729. सत्त्वनाविष्टचेतनः R. Gorr. 2, 33, 11.  
fg. MĀRK. P. 51, 100. ohne Ergänzung 80 v. a. von einem bösen Geiste  
besessen TRIK. 3, 1, 3. H. 491. HĀR. 66. आविष्टा इव युध्यते MBh. 6, 1759.  
HARIV. 4311. R. 5, 21, 8. KATHAS. 17, 130. 70, 62. PRAB. 75, 10. ज्ञया R.  
3, 1, 9. लुधा MBh. 3, 2420. 12, 4274. PAKĀT. 69, 4. कर्धाविष्ट KĪTJ. ÇR.  
25, 11, 31. वेदनया (Schmerz und Wissen) Spr. 2896. कृच्छ्याविष्टचेतना  
MBh. 3, 2106. मन्मथाविष्टहृदय BRAHMA-P. in LA. (III) 54, 10. उपद्रवा-  
विष्ट SUGR. 4, 120, 2. मन्युना MBh. 5, 5996. 13, 184. रोषेण मरुता R. 2,  
74, 1. R. Gorr. 1, 68, 20. रोषाविष्टचित्त PAKĀT. 186, 5. कोपेन MĀRK. P.